श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

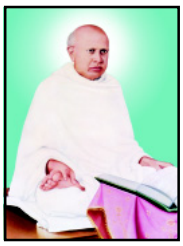

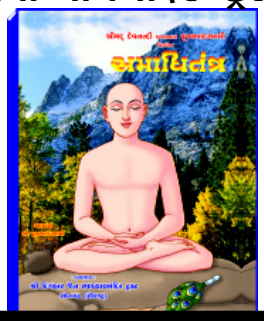

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - ३ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा ३२ से ४४**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. ३०-१२-२०१८

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न-१ : नीचे दिये गये प्रश्नोंमेंसे कोई भी बारह पश्नोंके उत्तर दिजीये। (दो लाईनमें) २४

(१) मैं किस प्रकार स्वयं आत्माको प्राप्त हुआ हूँ ? मैंने आत्माको कहाँसे पृथक् किया है ?

(२) घोर तप करने पर भी मैं आत्माको प्राप्त क्यों नहीं होता हूँ? शरीरसे भिन्न आत्माको क्यों नहीं जानता हूँ ?

(३) अंतरात्मा जीव भयानक दुष्कर्मों भोगता होने पर भी क्यों खेदको प्राप्त नहीं होता है ?

(४) किसका मन राग-द्वेषके तरंगोंसे चलित नहीं होता है ? कौनसा जीव आत्मतत्त्व देख सकता नहीं है ?

(५) अविक्षिप्त मन कैसा है ? कैसे मनका आश्रय करना नहीं ?

(६) रागसे मन अवशरूपसे विक्षिप्त होता है ? वह किस प्रकार स्थिर होता है ?

(७) किसके मनमें अपमानादि होते हैं ? किसको वह अपमान तिरस्कारादि होते नहीं है ?

(८) तपस्वी आत्माको क्या करनेसे राग-द्वेष शांत हो जाते हैं ?

(९) कौन शरीरादि विषयोंकी ओरके प्रेमका नाश करता है ?

(१०)आत्माके विभ्रमसे उत्पन्न हुए दुःख शांत होते हैं ?

(११)कौनसा जीव दुर्धर तप करने पर भी निर्वाणको प्राप्त नहीं करता है ?

(१२)सुंदर शरीर और स्वर्गके विषयोंकी अभिलाषा कौन करता है ?

(१३)कर्म कौन बांधता है और कौन कर्मबन्धसे मुक्त होता है ?

(१४) आत्माके विभ्रमसे उत्पन्न हुए दुःख किस प्रकार शांत होते हैं ?

(१५)इस ग्रंथमें मुनिराजकी मुख्यतासे सभी बाते बतलाई है वह बात अविरत सम्यग्दृष्टि पर किस प्रकार लागू होती हैं ?

प्रश्न-२ : नीचे दिये गये प्रश्नोंमेंसे कोई भी तीन प्रश्नके उत्तर दिजीये । (पांच-छह लाईनमें) **१२**

(१) कौन स्वयंको स्त्री, पुरुष या नपुंसक मानता है ? कौन उसे मानता नहीं है ?

(२) मैं स्वयं आत्माको किस प्रकार प्राप्त हुआ हूँ ?

(३) किसका मनरूपी जल राग-द्वेषादि तरंगोंसे चलित नहीं होता है ?

(४) अविद्याके अभ्याससे उत्पन्न हुए संस्कारो द्वारा क्या होता है ? वे संस्कार कौनसे हैं ?

प्रश्न-३ : रिक्त स्थानकी पूर्ति किजीये । **४**

(१) ज्ञानी अर्थात् अंतरात्माके रागादि ..... कहे जाते हैं ।

(२) जिसका उपयोग ..... लगता है उसे जगतके सभी पदार्थ निरस लगते हैं ।

(३) जिनमतमें तो ऐसी परिपाटी है कि प्रथम ..... हो पश्चात् ..... होते है ।

(४) शरीरादिमें ..... करनेवाला बहिरात्मा और उस द्वारा ..... और ..... भोगोंकी इच्छा करता है ।

प्रश्न-४ नीचे दिये गये विषय पर निबंध लिखे । (बीस लाईन) **१०**

(१) अज्ञानतावश किसके निमित्तसे कर्मका बंध होता है विस्तारसे समझाईये ।

(२) धर्मीको अस्थिरताके कारण राग-द्वेष हो जाते हैं लेकिन उसका स्वामीपना नहीं है विस्तारसे समझाईये ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र-३ के उत्तरपत्र ता. २०-२-२०१९ तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।